ISSN 0975-8321

वाङ्मय

(त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका)

Peer Reviewed Journal
(Impact factor 5.125)

सम्पादक :
डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद

हिन्दी बाल-उपन्यासों पर केन्द्रित आलोचना अंक

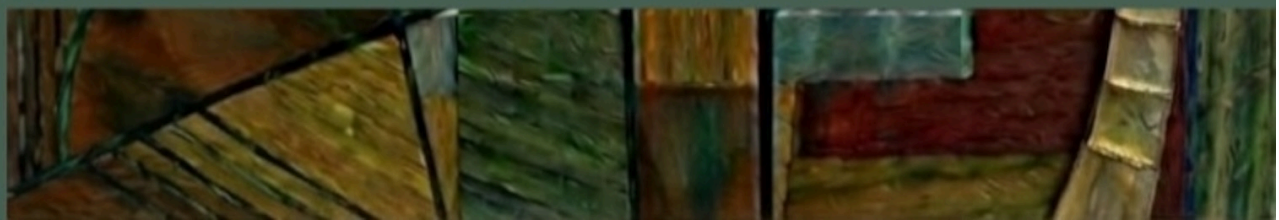

ISSN 0975-8321

वाङ्मय त्रैमासिक

वर्ष : 24 अप्रैल 2026-सितम्बर 2026 (संयुक्तांक)

सम्पादक
डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद
मोबाइल : 9044918670

सलाहकार सम्पादक
प्रो. मेराज अहमद
(ए.एम.यू. अलीगढ़)

परामर्श मण्डल
प्रो. रामकली सराफ(वाराणसी)
डॉ. शगुफ़्ता नियाज़ (अलीगढ़)

सम्पादकीय सम्पर्क
205- फेज-1, ओहद रेजीडेंसी,
नियर पान वाली कोठी,
दोदपुर रोड, सिविल लाइन, अलीगढ़-202002
मोबाइल : 7007606806
E-mail : vangmaya@gmail.com

इस अंक का मूल्य-300/-

सहयोग राशि :
द्विवार्षिक शुल्क व्यक्तिगत/संस्थाओं के लिए : 1000 रुपए

सह-सम्पादक :
डॉ. मोहम्मद आसिफ खान

पुनरावलोकन समिति :
• प्रो. मेराज अहमद, हिन्दी विभाग, ए.एम.यू. अलीगढ़
• प्रो. इकरार अहमद, प्राचार्य, विवेकानंद ग्रामद्योग महाविद्यालय, दिबियापुर, औरैया

कानूनी सलाहकार :
एम. एच. खान, एडवोकेट(हाईकोर्ट, इलाहाबाद)
एम. ए. खान, एडवोकेट(हाईकोर्ट, इलाहाबाद)

सम्पादन/संचालन :
अनियतकालीन, अवैतनिक और अव्यावसायिक।
रचनाकार की रचनाएँ उसके अपने विचार हैं।
रचनाओं पर कोई आर्थिक मानदेय नहीं दिया जाएगा।
लेखकों, सदस्यों एवं मित्रों के आर्थिक सहयोग से पत्रिका प्रकाशित होती है।
उनसे सम्पादक-प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।
किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र अलीगढ़ होगा।

रचनाकारों से.....

* रचनाएँ कृतिदेव 10 में टाइप कराकर ही भेजें। * कृतियों की समीक्षा के लिए पुस्तक की दो प्रतियाँ भेजना अनिवार्य है। * नमूना प्रति अवलोकन के लिए 300 रुपये भेजना अनिवार्य है। * हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं की रचनाओं का वाङ्मय स्वागत करता है।

शुल्क भेजने का पता
मनीआर्डर या बैंक ड्राफ़्ट : 'डॉ. फ़ीरोज़ अहमद' या 'वाङ्मय' के नाम
205- फेज-1, ओहद रेजीडेंसी, नियर पान वाली कोठी, दोदपुर रोड, सिविल लाइन, अलीगढ़-202002

डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद की ओर से डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद द्वारा प्रकाशित, डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद द्वारा मुद्रित तथा नवमान आफसेट प्रिंटर्स अलीगढ़ में मुद्रित एवं ई-3, अब्दुल्लाह क्वाटर्स, लाल बहादुर शास्त्री मार्ग अलीगढ़ से प्रकाशित। सम्पादक- डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद

सम्पादकीय

गम्भीर, विज्ञ और विवेकशील पाठक इस अंक को बख़ूबी आँकें

'वाङ्मय' के इस हिन्दी बाल-उपन्यास अंक की तैयारी में एकाग्रतापूर्वक लगभग पाँच-छह माह तो लग ही गये। इसमें अनेक लेखकों-लेखिकाओं की सहभागिता रही है। उन्हें तो आप पढ़ेंगे ही, अनेक सद्भावीजनों का भी प्रत्यक्ष-परोक्ष सहयोग हमें विभिन्न पुस्तकों से लेकर अन्तरजाल तक खोजबीन में प्रायः मिलता रहा है। उस सबका उपयोग सम्भव नहीं था किन्तु; उस सबसे हमें हिन्दी बाल-उपन्यास के अद्यतन-परिदृश्य को जानने-समझने में बहुत मदद मिली। इसी बीच कुछ सन्दर्भ ऐसे भी मिले, जिनसे द्विविधा यह हो गयी कि जिस पुस्तक को किसी ने बाल-उपन्यास दर्ज किया है, उसे प्रकाशक ने पुस्तक में 'कहानी' छाप दिया है। ऐसी पुस्तक हमें यदि तथ्यतः उपन्यास नहीं प्रतीत हुई है तो उसे हमने चर्च्य-सूची से अलग कर दिया। इससे यह भी समझ में आया कि लेखक ने बाल-उपन्यास भले लिखा हो, किसी भ्रमवश यदि प्रकाशक ने ऐसी कृति बाल-कहानी संकलन जताते हुए छाप दी है और जो पाठ या पाठांश उपलब्ध है, वह न बाल-कहानी के रूप में आश्वस्त कर रहा है और न बाल-उपन्यास के रूप में तो उसपर लिखना गैर-ज़रूरी ही माना गया। यह अंक जैसा भी है आपके सामने है, पर कदाचित् ऐसा पहला अंक है, जिसमें हिन्दी बाल-उपन्यासों के विषय में एकसाथ इतने लेखकों के सिंहावलोकन और विहंगावलोकन एकत्रित हैं। यह कितना सार्थक सन्तुलित और महत्त्व का बन पड़ा है, यह तो हिन्दी बालसाहित्य और विशेष रूप से बाल-उपन्यासों के रुचिशील पाठक, लेखक, जिज्ञासु और गहन-अध्येता ही सचमुच आँकेंगे।

एक दृष्टि में प्रेमचन्द 'कुत्ते की कहानी' से लेकर 2024 तक प्रायः बीते हुए वर्षों में से कुछ चुने बाल-उपन्यासों पर दृष्टिपात हुआ है तो 1936 से पहले और बाद के भी कई हिन्दी बाल-उपन्यासों को रेखांकित करते हुए चर्चा के केन्द्र में लाया गया है।

380 पृष्ठों में हिन्दी बाल-उपन्यासों के विभिन्न लेखन व विकासक्रम पर वस्तुतः आलोचनात्मक व समीक्षात्मक न होकर सामग्री आत्मपरक, प्रशंसात्मक या अंक कुछ बाल साहित्यकारों पर बहुत झुकाव-फैलाव लिये हो तो उसपर प्रबुद्ध और मनीषी पाठकों का आलोचनात्मक और प्रतिक्रियात्मक-दृष्टिक्षेप हम तक अवश्य आना चाहिए, पर वह तर्कसंगत और प्रमाण-पुष्ट रूप में लिखा हुआ हो, भले ही इन सतरों का लेखक भी इस आलोचना-प्रतिक्रिया के दायरे में हो तो गम्भीर-अध्येता, मूल्यांकनकर्त्ता पाठक की स्पष्टोक्ति उसका अधिकार है, उसमें संकोच कैसा? ऐसे अंक परिश्रमी शोधार्थियों के लिये उपयोगी होते हैं। इसलिये हम उसको पुस्तक रूप में प्रकाशित करने को भी प्राथमिकता पर रखते हैं। निर्निमेष-पाठकीय और आलोचकीय दृष्टियाँ यदि इस अंक की कमियों-खामियों की

चर्चा से उजागर करेंगी तो वह जिज्ञासुओं और शोधार्थियों के लिये उपयोगी रहेगी।

हिन्दी बालसाहित्य की विभिन्न विधाओं के शोध-प्रबन्धों के क्रम में हिन्दी बाल-उपन्यासों पर 5-7 से अधिक शोधकार्य नहीं हुए हैं और जो हुए हैं वे आज़ादी के बाद के अद्यतन हिन्दी बाल-उपन्यासों तक तो आ जाते हैं किन्तु; आज़ादी से पहले के हिन्दी बाल-उपन्यासों का अध्ययन अपवाद स्वरूप या नगण्य ही हुआ है। इससे आज़ादी पूर्व बच्चों के हिन्दी बाल-उपन्यासों के लेखन का इतिहास, उसका विकास-क्रम और निर्निमेष-मूल्यांकन नगण्य ही हुआ है, जबकि तब पुस्तकालयों में बाल-उपन्यास और बाल-पत्रिकाओं के अंक ही नहीं; उनमें छपी बहुतेरी सामग्री मिल जाती थी। इसका गहन और तथ्यपूर्ण अध्ययन, शोध-कार्य को सन्दर्भ-सामग्री अधिकाधिक समृद्ध करता था। अब अधिकांश शोध बालसाहित्य के प्रकाशकों-प्रकाशनों से सुलभ पुस्तकों और छपे-अनछपे शोध-प्रबन्धों को चालते-छानते हुए पूरा करना सरल-सुमार्ग हो चला है, तो किस स्तर का शोधकर्म परवान चढ़ रहा है यह बताने की आवश्यकता रह ही नहीं जाती!

आपके अभिमत और प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

ध्यातव्य...

सदाचारी बालक (बाल-उपन्यास)

जनवरी 1916 ई. में श्रीयुत सैयद अमीर अली (मीर) लिखित 'सदाचारी बालक' नामक एक शिक्षाप्रद कहानी हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, हीरा बाग़, बम्बई से प्रकाशित हुई। (प्रा. स्था.- आ. भा. प. काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि- सदाचारी बालक (एक शिक्षाप्रद कहानी), लेखक देवरी निवासी श्रीयुत सैयद अमीर अली (मीर), डिपुटी इन्स्पेक्टर ऑफ स्कूल, उदयपुर (सी. पी.) स्टेट, प्रकाशक हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, बम्बई, द्वितीयावृत्ति, पौष 1917 वि., जनवरी 1916 ई., पृ. 23) डॉ. माताप्रसाद गुप्त की पुस्तक में द्वितीय संस्करण 1917 ई. लिखा है, जो प्रकाशक नाथूराम प्रेमी, मुंबई लिखा है।(हिंदी पुस्तक साहित्य, (1867-1942), हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू. पी. 1945, पृ. 374) इसका एक और संस्करण जो, सम्भवतः तीसरा संस्करण होना चाहिए, (पुस्तक के मुखपृष्ठ पर संस्करण-संख्या नहीं दी हुई है) दिसम्बर 1917 ई. में हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित । (प्राप्ति स्थान-आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी) इस पुस्तक में एक सदाचारी बालक की कथा वर्णित है, जो अध्यवसाय के बल पर अपना अध्ययन चालू रखता है तथा अपनी माता का पालन-पोषण भी करता है। (गोपाल राय-हिन्दी उपन्यास कोश-1, पृ. 211-12)

अनुक्रम

सम्पादकीय/3

1. बालसाहित्य क्या है?/9
   डॉ. श्रीप्रसाद

2. हिन्दी का पहला-बालउपन्यास?/16
   बन्धु कुशावर्ती

3. हिंदी बाल-उपन्यास : विस्मय, संघर्ष और संवेदना की बहुआयामी यात्रा/33
   नवनीत नीरव

4. 21वीं सदी के चुनिंदा बाल-उपन्यास/77
   शकुन्तला कालरा

5. आत्मकथ्य/98
   नासिरा शर्मा

6. नासिरा शर्मा का बालसाहित्य : सर्जनात्मकता और दायित्वबोध/102
   कमलानंद झा

7. मैं और मेरे बाल-उपन्यास बच्चों की एक अलमस्त दुनिया/112
   प्रकाश मनु

8. हिंदी बालसाहित्य की अनमोल धरोहर (संदर्भ-प्रकाश मनु के सम्पूर्ण उपन्यास-खंड-1)/155
   डॉ. शत्रुघ्न सिंह

9. प्रकाश मनु के बाल-उपन्यास/165
   डॉ. रमेश कुमार

10. बच्चे मन के सच्चे(संदर्भ : प्रकाश मनु के बाल-उपन्यास)/183
    शिवचंद प्रसाद

11. आत्मकथ्य/194
प्रो. मोहम्मद अरशद

12. अनजानी दुनिया की 'अनोखी यात्रा'/199
डॉ. नितिन सेठी

13. उपन्यास लिखते हुए.../208
ज़ाकिर अली 'रजनीश'

14. नव्यतम विज्ञान के आलोक में बाल उपन्यास समय के पार एवं ह्यूमन ट्रांसमिशन/214
डॉ. रत्नेश सिन्हा

15. संवेदना के क्षितिज पर जीवन के रंग/229
आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

16. 'टेढ़ा पुल' उपन्यास में चित्रित बाल-मनोविज्ञान और विस्थापन का द्वंद्व/241
प्रो. सियाराम

17. द्रोणवीर कोहली के उपन्यास 'नानी' में बाल-मनोविज्ञान/252
प्रो. अमिता तिवारी

18. बाल-उपन्यासों की रचना-प्रक्रिया/260
क्षमा शर्मा

19. क्षमा शर्मा के बाल-उपन्यासों में बाल-मनोविज्ञान/267
डॉ. भारती अग्रवाल

20. मैंने क्यों लिखे बाल-उपन्यास : आत्मकथ्य/276
संजीव जायसवाल 'संजय'

21. संजीव जायसवाल 'संजय' के बाल-उपन्यास-एक विवेचना/291
सुधा जुगरान

22. उषा यादव के बाल-उपन्यासों में बाल-संसार/305
डॉ. कुलभषूण मौर्य

23. उषा यादव के बाल-उपन्यासों में अभिव्यक्त बाल-नैतिकता एवं जीवन-मूल्य/314
डॉ. जितेश कुमार

24. उषा यादव के बाल-उपन्यास : एक जादुई एहसास/322
डॉ. दीक्षा गुप्ता

25. बाल-उपन्यास : आत्मकथ्य/329
अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'

26. मेरी लेखन-प्रक्रिया/335
समीर गांगुली

27. हिंदी बाल-कथा-परम्परा और समीर गांगुली/340
डॉ. विपिन कुमार

28. जीवन-मूल्य और देशभक्ति जगाते बाल-उपन्यास/352
डॉ. लवलेश दत्त

29. बालमन की स्मृतियाँ और आधुनिक सभ्यता का द्वंद्व : नाच घर/363
श्रीकृष्ण यादव

30. पर्यटनपरक और प्रयोगशील 'माणा में मणिका'/369
बकुल वशिष्ठ

31. नासिरा शर्मा से बन्धु कुशावर्ती की बातचीत/373

(विविध आलेख)

1. नागार्जुन का कथा साहित्य : एक अध्ययन/381
डॉ. अश्विनी कुमार पाण्डेय

2. कौशल्या बैसंत्री और सुशीला टाकभौरे की आत्मकथाओं में शोषण, पीड़ा और जीवन यथार्थ की अभिव्यक्ति/389
रचना/डॉ. अश्विनी कुमार पाण्डेय

3. राजा + इन्द्र: भारतीय संस्कृति में स्मृति के सौन्दर्य की व्यवस्था/396
राजेन्द्र

4. केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में जीवन मूल्य/403
डॉ. अश्विनी कुमार पाण्डेय

5. सौन्दर्य चेतना की दृष्टि से नीरज का काव्य/407
शिवम गिरि

6. हरिकृष्ण प्रेमी के नाटकों में समन्वय भावना/415
ज्ञान प्रकाश मिश्रा/प्रो. वन्दना पांडेय

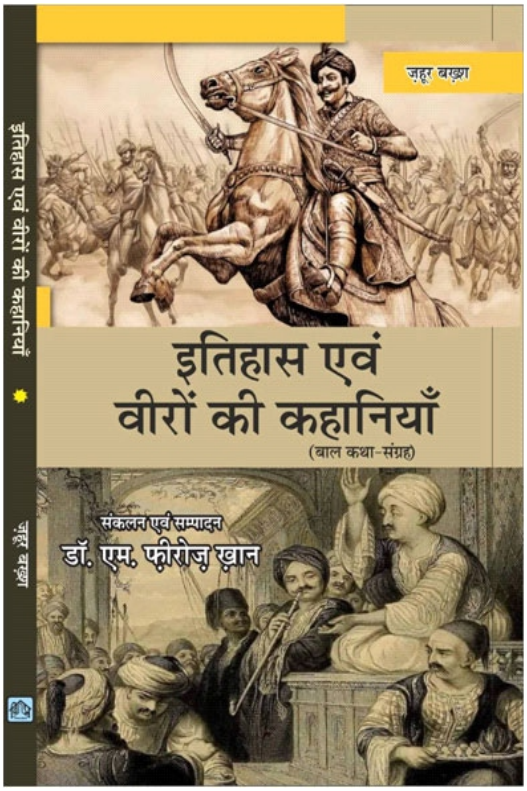
इतिहास एवं वीरों की कहानियाँ
ज़हूर बख़्श
इतिहास एवं वीरों की कहानियाँ
(बाल कथा-संग्रह)
संकलन एवं सम्पादन
डॉ. एम. फ़ीरोज़ ख़ान

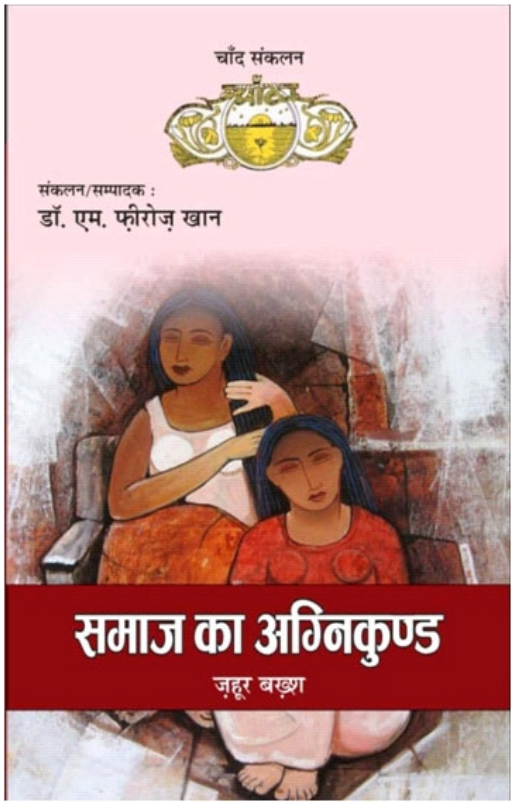
चाँद संकलन
चाँद
संकलन/सम्पादक :
डॉ. एम. फ़ीरोज़ खान
समाज का अग्निकुण्ड
ज़हूर बख़्श

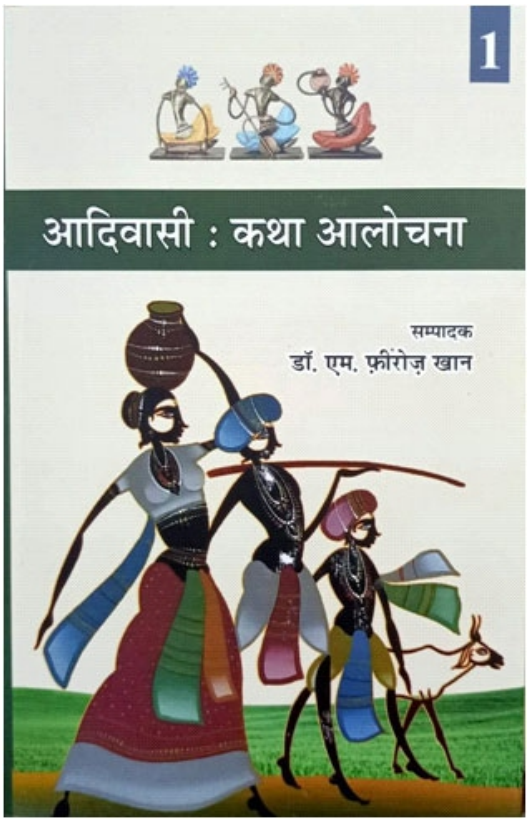
1
आदिवासी : कथा आलोचना
सम्पादक
डॉ. एम. फ़ीरोज़ खान

2
संपादक
डॉ. एम. फ़ीरोज़ खान
आदिवासी उपन्यास
दशा एवं दिशा